डिस्लेक्सिया और बहु-बुद्धिमत्ता के सिद्धान्त को समझना

मृदुला गोविन्दराजू

डिस्लेक्सिया अधिगम की सबसे आम अक्षमता है जो दस में से एक स्कूली बच्चे को होती है। वास्तव में यह संख्या अधिक भी हो सकती है, शायद 20 प्रतिशत तक, क्योंकि भारत के लिए कोई निश्चित सांख्यिकीय डेटा उपलब्ध नहीं है। अन्य अक्षमताओं के विपरीत डिस्लेक्सिया वाले बच्चों में कोई शारीरिक 'निशान' या अभिलक्षण नहीं होते। इसलिए यह एक *अदृश्य विकलांगता* है।

डिस्लेक्सिया से बच्चे की बुद्धि प्रभावित नहीं होती, लेकिन ऐसे बच्चों को अकसर 'आलसी, बेवकूफ, भोंदू' कह दिया जाता है और उन्हें स्कूल में दूसरे बच्चों की दादागिरी, माता-पिता के क्रोध और शिक्षकों के तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। नतीजतन बच्चा कम आत्मसम्मान से ग्रस्त हो जाता है, ध्वंसात्मक व्यवहार करने लगता है और अपने से छोटे बच्चों को तंग करने लगता है।

डिस्लेक्सिया को *विशिष्ट अधिगम अक्षमता (स्पेसिफिक लर्निंग डिसेबिलिटी — एसएलडी)* भी कहा जाता। ये बच्चे औसत से लेकर उच्च औसत बुद्धि वाले होते हैं और अत्यधिक रचनात्मक होते हैं। अगर इन्हें समय पर सहायता न मिले तो हो सकता है कि वे स्कूल छोड़ दें और सामाजिक अपराधी बन जाएँ।

डिस्लेक्सिया क्या है?

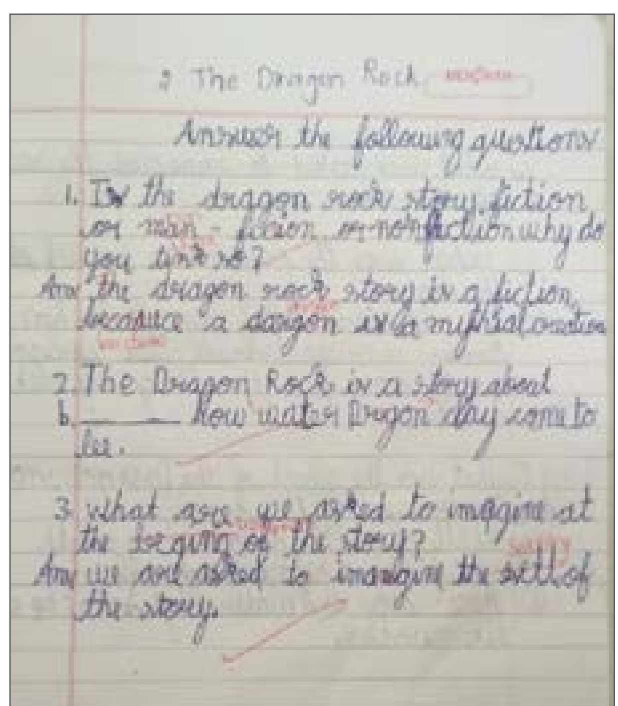
डिस्लेक्सिया कोई बीमारी नहीं है। यह तन्त्रिका सम्बन्धी एक स्थिति है जिसमें मस्तिष्क सूचनाओं को अलग तरह से संसाधित करता है। विकलांगजनों का अधिकार अधिनियम, 2016 के अनुसार (खण्ड 2 की धारा 2a, पृष्ठ 34), डिस्लेक्सिया या एसएलडी का अर्थ है, '... ऐसी अवस्थाओं का विषम समूह जिसमें बोली जाने वाली या लिखित भाषा के प्रसंस्करण की कमी होती है; इससे समझने, बोलने, पढ़ने, लिखने, वर्तनी या गणितीय गणना करने में कठिनाई होती है; साथ ही इसमें अवधारणात्मक अक्षमता, डिस्लेक्सिया, लेखन विकार (डिस्ग्राफिया), गणना अक्षमता (डिस्कैल्कुलिया), डिस्प्रैक्सिया और विकासात्मक वाचाघात (डेवलेपमेंटल अफेसिया) जैसी अवस्थाएँ भी आ जाती हैं।'

'डिस्लेक्सिया मस्तिष्क आधारित अधिगम अक्षमता है जो विशेष रूप से किसी व्यक्ति की पढ़ने की क्षमता को बाधित करती है। सामान्य बुद्धि होने के बावजूद भी यह लोग आमतौर पर अपेक्षित स्तर से काफ़ी कम स्तर पर पढ़ते हैं' (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर एण्ड स्ट्रोक)।

डिस्लेक्सिया के लक्षण

डिस्लेक्सिया के लक्षण हर व्यक्ति के लिए विशिष्ट होते हैं, अर्थात, डिस्लेक्सिया वाले किन्हीं भी दो व्यक्तियों में एक जैसे लक्षण नहीं होते, लेकिन कुछ लक्षण ऐसे हैं जो सभी के लिए सामान्य हैं।

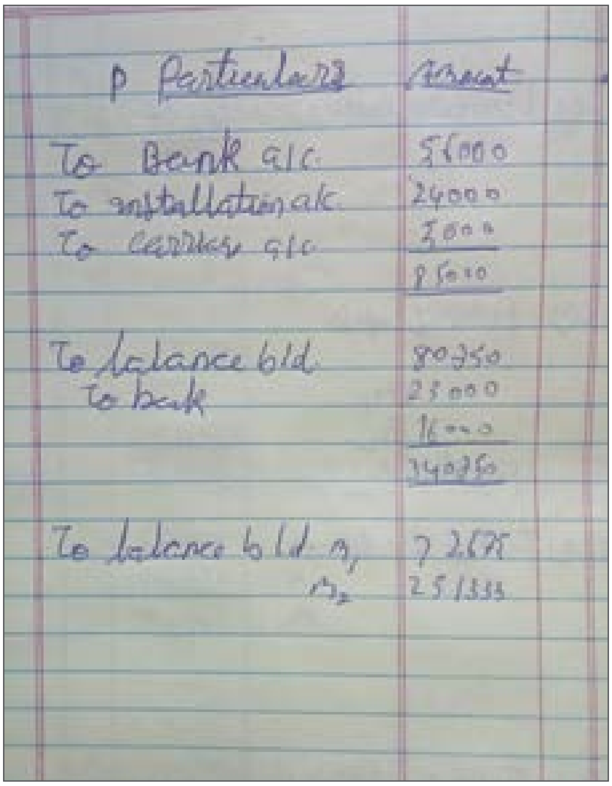
- ध्वनियों के प्रसंस्करण की समस्या — pot की बजाय pet
- स्पेलिंग न बता पाना — powder की बजाय powdr
- अक्षरों को उलटा पढ़ना; अक्षरों के क्रम में भ्रम — b और d, form-from
- लम्बे शब्द पढ़ने में परेशानी
- शब्दों को छोड़ना या ग़लत पढ़ना — playing के लिए play, earth के लिए every
- कक्षा कार्य पूरा करने में असमर्थता
- श्यामपट्ट से नक़ल करने में कठिनाई

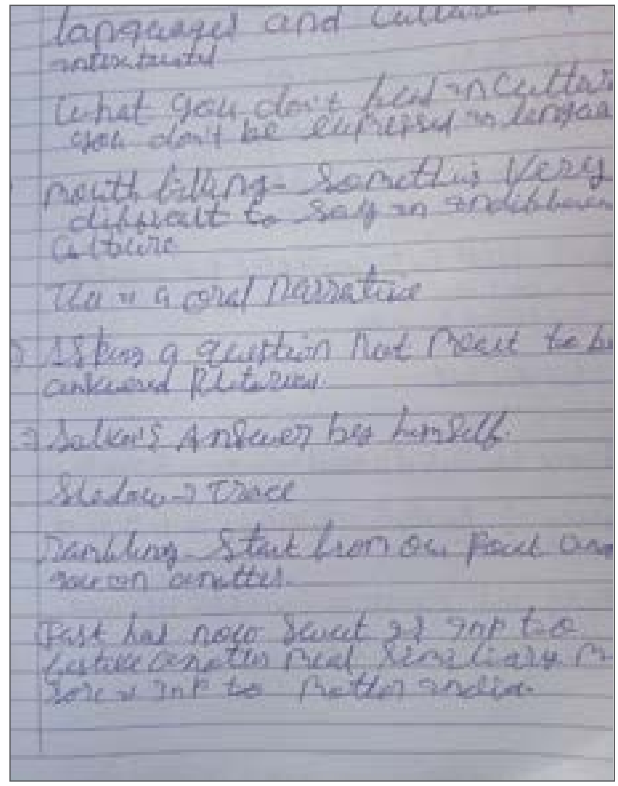


- संख्या को उलटे क्रम में पढ़ना; स्थानीय मान की जानकारी न होना
- समय का अच्छा बोध न होना
- नियोजन, प्राथमिकता देने और व्यवस्थापन में कठिनाई

पाँचवीं कक्षा के डिस्लेक्सिया वाले एक विद्यार्थी के अँग्रेज़ी के कक्षा कार्य के कुछ नमूने पिछले पेज पर दिए गए चित्र में ग़लत स्पेलिंग वाले शब्द हैं : causes, town, folk, dragon, expect, wall

ग्यारहवीं कक्षा के डिस्लेक्सिया वाले एक विद्यार्थी का हिसाब-किताब; और अँग्रेज़ी का कक्षा कार्य।





डिस्लेक्सिया वाले बच्चों का उपचार करना

छुटपन में ही पहचान करें

यह सबसे अच्छा उपाय है। जब निम्न प्राथमिक कक्षाओं में ही इस बात की पहचान हो जाए कि बच्चों को सीखने में कठिनाई हो रही है और जब उन्हें उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपचारात्मक सहायता दे दी जाए तो वे न केवल अकादमिक सफलता प्राप्त करते हैं, बल्कि सामाजिक रूप से भी अच्छी तरह से समायोजित हो जाते हैं।

डिस्लेक्सिया के उपचार के तरीक़ों में शिक्षकों को प्रशिक्षित करें

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को डिस्लेक्सिया वाले बच्चों की पहचान करने और उन्हें कक्षा में उपचारात्मक तरीक़े से पढ़ाने के लिए तैयार करना चाहिए। मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन (एमडीए)[1] सरकारी और निजी, दोनों प्रकार के स्कूलों में शिक्षकों के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। एमडीए द्वारा स्कूलों में संसाधन कक्ष भी स्थापित किए जाते हैं ताकि बच्चों का स्कूल परिसर में ही उपचार किया जा सके।

विशेषज्ञों द्वारा मूल्यांकन करवाएँ

मानकीकृत उपकरणों का उपयोग करके जो आकलन किए जाते हैं, वे किसी व्यक्ति में डिस्लेक्सिया की उपस्थिति की पुष्टि करते हैं। इससे बच्चे की देखभाल करने वालों को बच्चे की ताक़त और ज़रूरतों का पता लगाने में मदद मिलती है, जिससे वे कठिनाइयों से निपटने में बच्चे की मदद करने के लिए हस्तक्षेप की योजना बना पाते हैं। सभी परीक्षा बोर्ड एसएलडी वाले बच्चों को विभिन्न रियायतें देते हैं। आकलन से पता चल जाता है कि बच्चे को किस प्रकार की एसएलडी है, उदाहरण के लिए डिस्लेक्सिया, डिस्प्रैक्सिया, गणना अक्षमता, लेखन विकार आदि। साथ ही इससे विकलांगता की गम्भीरता और एसएलडी के साथ मौजूद सह-अस्वस्थताओं जैसे ध्यानाभाव एवं अतिसक्रियता विकार (अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर — एडीएचडी) के बारे में भी पता चल जाता है। इसके बाद आवश्यक उपचार और अन्य थेरेपी के बारे में स्थिति स्पष्ट हो पाती है, उदाहरण के लिए स्पीच थेरेपी और/या व्यावसायिक थेरेपी (ऑक्यूपेशनल थेरेपी — ओटी)।

उपचारात्मक हस्तक्षेप क्या है?

- यह सुव्यवस्थित होता है
- यह बच्चे की ताक़त और ज़रूरतों की पहचान करता है
- इसे व्यक्तिगत रूप से किया जाता है
- यह बहुसंवेदी है

डिस्प्रैक्सिया, गणना अक्षमता (डिस्कैल्कुलिया) व लेखन विकार (डिस्ग्राफिया)

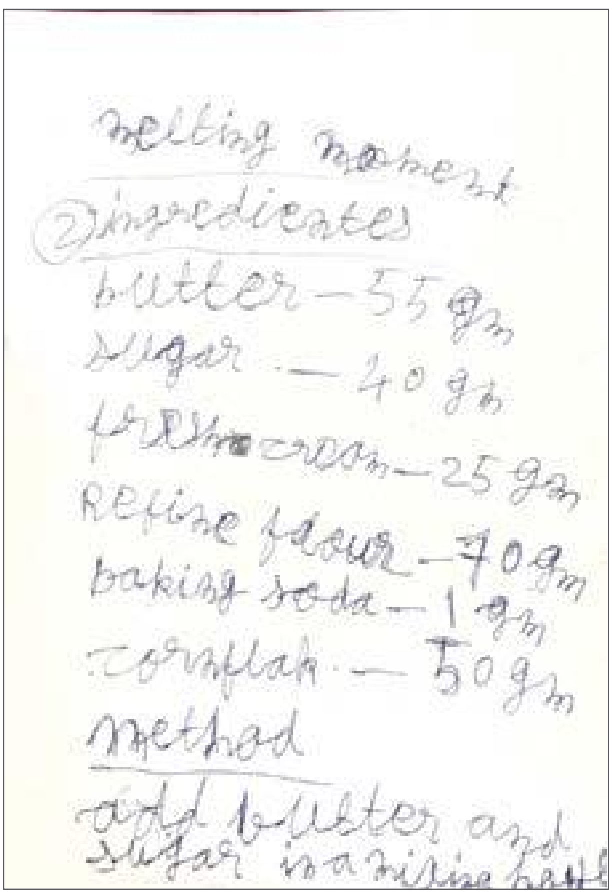
डिस्प्रैक्सिया

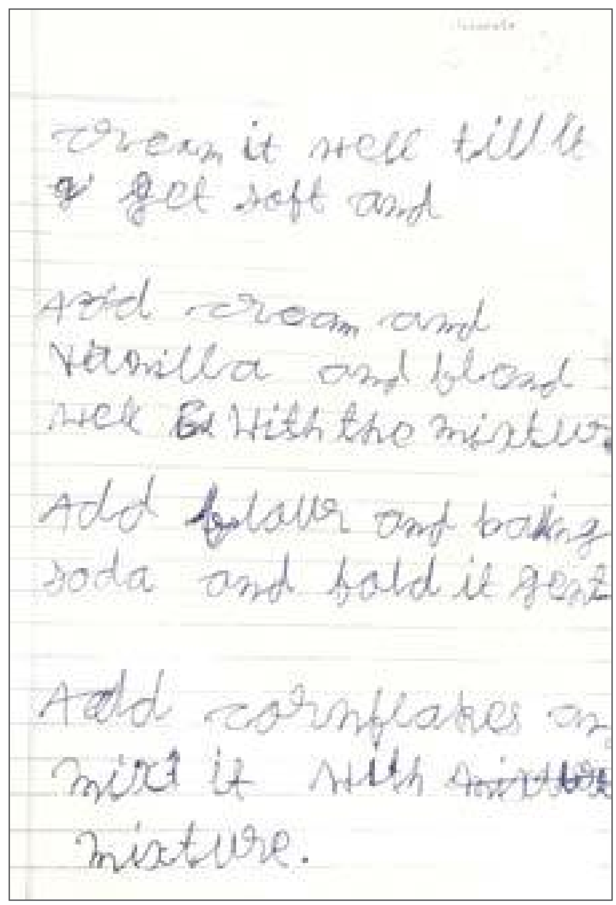
विकासात्मक डिस्प्रैक्सिया एक विकार है जिसमें संवेदी और मोटर सम्बन्धी कार्यों के नियोजन और कार्यान्वयन की अक्षमता होती है (स्रोत : नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर एण्ड स्ट्रोक)। जिन बच्चों को डिस्प्रैक्सिया है, उन्हें व्यावसायिक थेरेपी और विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है।

डिस्प्रैक्सिया के लक्षण

- कमज़ोर सन्तुलन और समन्वय — उलझकर गिरना, आसानी से गिरना, लोगों और वस्तुओं से टकरा जाना, दाएँ-बाएँ के समन्वय को लेकर समस्याएँ होना।
- अदक्षता — चीज़ों को गिराना, हाथ की पकड़ का मज़बूत न होना, ख़राब लिखावट।
- बोध सम्बन्धी कठिनाइयाँ — नक्शों को नहीं पढ़ पाना, सड़क पार करने में कठिनाई।
- भावनात्मक और व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ।
- पढ़ने, लिखने और बोलने में कठिनाई।
- कमज़ोर सामाजिक कौशल, शारीरिक भंगिमा और स्मृति।

दसवीं कक्षा के डिस्प्रैक्सिया और डिस्लेक्सिया वाले एक विद्यार्थी का बेकिंग और कन्फेक्शनरी कक्षा कार्य।





गणना अक्षमता (डिस्कैल्कुलिया)

गणना अक्षमता एक विकार है जिसमें संख्याओं के अर्थ को समझने और सवालों को हल करने के लिए गणितीय सिद्धान्तों को लागू करने में असमर्थता होती है (स्रोत : ब्रिटिश डिस्लेक्सिया एसोसिएशन)।

गणना अक्षमता के लक्षण

क. यह समझने में असमर्थता कि दो अंकों में से कौन-सा अंक बड़ा है।

ख. गिनती करने की प्रभावी रणनीतियों का अभाव।

ग. अबाध रूप से संख्या की पहचान न कर पाना।

घ. एक अंकीय सरल संख्याओं को दिमाग़ी तौर से जोड़ने में असमर्थता।

ङ. कार्यशील स्मरण क्षमता का सीमित होना।

दसवीं कक्षा के गणना अक्षमता और डिस्लेक्सिया वाले एक विद्यार्थी द्वारा किया गया गुणा।



लेखन विकार (डिसग्राफिया)

लेखन विकार तंत्रिका सम्बन्धी एक विकार है जिसमें लेखन सम्बन्धी अक्षमता होती है। विशेष रूप से यह विकार व्यक्ति के लेखन को विकृत या ग़लत बनाता है। बच्चों में यह विकार आमतौर पर तब सामने आता है जब उन्हें पहली बार लेखन से परिचित कराया जाता है। पूरी तरह से निर्देश दिए जाने के बावजूद वे अक्षरों को अनुचित आकार और फ़ासले के साथ बनाते हैं अथवा ग़लत शब्द या ग़लत स्पेलिंग लिखते हैं। ऐसे विकार वाले बच्चों में अधिगम की अन्य अक्षमताएँ भी हो सकती हैं; लेकिन उनको आमतौर पर कोई सामाजिक या अन्य अकादमिक समस्याएँ नहीं होती हैं (स्रोत: नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ न्यूरोलॉजिकल डिसऑडर्स एण्ड स्ट्रोक)।

जब किसी बच्चे को आकलन के लिए भेजा जाता है तो क्या होता है?

ये आकलन वैज्ञानिक रूप से तैयार किए गए परीक्षण/उपकरण हैं जिनका उपयोग विशेषज्ञ यह पता लगाने के लिए करते हैं कि बच्चे को किस तरह की एसएलडी है। उनके द्वारा दी गई रिपोर्ट से विशेष शिक्षक बच्चे के लिए एक व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (इंडिविजुअल एजुकेशनल प्लान — आईईपी) तैयार कर सकते हैं। रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि बच्चे को स्पीच थेरेपी या व्यावसायिक थेरेपी की आवश्यकता है या नहीं।

स्कूल, माता-पिता, विशेष शिक्षक की तिकड़ी का महत्त्व

एसएलडी वाले बच्चों के साथ काम करने के शोध और अनुभव से पता चला है कि जब इन बच्चों को स्कूल, माता-पिता और विशेष शिक्षक से मज़बूत समर्थन प्राप्त होता है तो वे अकादमिक और सामाजिक जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। जब यह तीनों समूह मिलकर आपसी सहयोग के साथ काम करते हैं तो बच्चे ऐसा पेशा या करियर चुनने में सफल हो पाते हैं जहाँ वे उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं। साथ ही वे ऐसे वयस्क के रूप में विकसित होते हैं जो समाज के लिए महत्त्वपूर्ण योगदानकर्ता बनते हैं।

एसएलडी वाले बच्चों के माता-पिता का परामर्शन

किसी भी माता-पिता को जब पहली बार पता चलता है कि उनके बच्चे में अधिगम की अक्षमता है तो उन्हें गहरा धक्का लगता है। प्रारम्भ में वे इसे मानने को तैयार नहीं होते लेकिन धीरे-धीरे इस सच्चाई को स्वीकार करने लगते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि माता-पिता में से कोई एक सहयोग करता है (उदाहरण के लिए माता) जबकि दूसरा (उदाहरण के लिए पिता) इससे बिलकुल असहमत होता है। स्कूल शिक्षक, विशेष शिक्षक और प्रधान शिक्षक के लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि वे बार-बार माता-पिता को परामर्श दें ताकि उनके बच्चे को उपचारात्मक हस्तक्षेप का पूरा लाभ मिल सके।

बहु-बुद्धिमत्ता सिद्धान्त

एसएलडी वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण साधन है और हॉवर्ड गार्डनर के मल्टीपल इंटेलिजेंस (एमआई) सिद्धान्त पर आधारित है। परम्परा के अनुसार बुद्धि को बुद्धिलब्धि (आईक्यू) द्वारा मापा जाता है जिसमें किसी व्यक्ति की भाषा (भाषाई) और गणितीय (तार्किक-गणितीय) क्षमताओं की दक्षता का परीक्षण किया जाता है। लेकिन जब क्षमता के केवल इन दो क्षेत्रों का उपयोग करके किसी बच्चे का परीक्षण किया जाता है, जैसा कि भारत के स्कूलों में सामान्यतया होता है, तो हम एक सामान्य कक्षा में अन्य बच्चों के साथ अन्याय करते हैं। क्योंकि व्यक्ति अलग-अलग क्षमताओं का उपयोग करके अलग-अलग तरह से सीखते हैं। जिन बच्चों को भाषा (भाषाई) और गणित (तार्किक-गणितीय) में कठिनाई होती है, वे सीखने से चूक जाते हैं। इसके अलावा, यदि कक्षा में सभी बच्चे एक समान रूप से सीखने की क्षमता हासिल कर रहे हैं, तो जो टैस्ट और परीक्षाएँ वे लिखते हैं, उनके परिणाम भी समान होने चाहिए। लेकिन ऐसा होता नहीं है। अधिगम

हर व्यक्ति के लिए विशिष्ट होता है। इसलिए शिक्षण और आकलन को कक्षा में अधिगम की विविधताओं का ध्यान रखना चाहिए।

चूँकि व्यावहारिक रूप से ऐसी शिक्षण विधियों को विकसित करना मुश्किल है जो किसी सामान्य कक्षा में बच्चे की व्यक्तिगत ज़रूरतों को पूरा करती हों, इसलिए एमआई सिद्धान्त का उपयोग करके इस समस्या को हल किया जा सकता है। इसके उपयोग से किसी भी पाठ को विभिन्न तरीक़ों से पढ़ाया जा सकता है ताकि कक्षा में अधिक से अधिक बच्चे उसे समझ सकें। यह समस्या को समझने और उसका समाधान प्राप्त करने के कई परिप्रेक्ष्यों को बढ़ावा देता है। एमआई पद्धति से विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण उत्पन्न होते हैं तथा समूह कार्य व अपने साथियों से सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिलता है।

एमआई क्या है?

हावर्ड गार्डनर के अनुसार आठ 'संकेत' ऐसे हैं जो बुद्धिमत्ता को दर्शाते हैं। व्यापक शोध के बाद गार्डनर ने आठ अलग-अलग प्रकार की बुद्धिमत्ताओं की पहचान की (स्रोत : कॉम्पोनेंट्स ऑफ़ एमआई)।

स्थानिक बुद्धिमत्ता

- 'बड़े पैमाने पर स्थानिक सरणियों (उदाहरण के लिए हवाईजहाज़ के पाइलट, नाविक) या स्थान के अधिक स्थानीय रूपों (उदाहरण वास्तुकार, शतरंज के खिलाड़ी) की संकल्पना करना और उनका कुशलतापूर्वक प्रयोग करने की क्षमता' (स्रोत : कॉम्पोनेंट्स ऑफ़ एमआई)।
- अच्छी तरह से कल्पना कर पाना, दिशाओं का अच्छा ज्ञान होना, रंग, रूप, आकृति, आकार और उनके सम्बन्धों के बीच अन्तर कर सकना।
- यह क्षमता वास्तुकारों, कलाकारों, चित्रकारों, शतरंज के खिलाड़ियों, नाविकों, शिकारियों, गाइड और खगोलविदों में देखी जाती है।

दैहिक-गतिसंवेदी बुद्धिमत्ता

- 'समस्याओं को सुलझाने या उत्पादों को बनाने के लिए अपने पूरे शरीर या शरीर के कुछ हिस्सों (जैसे हाथों या मुँह) का उपयोग करने की क्षमता' (स्रोत : कॉम्पोनेंट्स ऑफ़ एमआई)।
- अच्छा समन्वय, सन्तुलन, निपुणता, मनोहरता, लचीलापन, शरीर की हरकतों व क्रियाओं में गति।
- यह क्षमता खिलाड़ियों, नर्तक-नर्तकियों, मूर्तिकारों, शल्य चिकित्सकों और मार्शल आर्ट के अभ्यासियों में देखी जाती है।

संगीत सम्बन्धी बुद्धिमत्ता

- 'लय, स्वर, छन्द, तान, स्वर माधुर्य और स्वर विशेषता के प्रति संवेदनशीलता। यह गायन, वाद्ययन्त्र बजाने और/या संगीत रचना करने की क्षमता को बढ़ा सकती है' (स्रोत : कॉम्पोनेंट्स ऑफ़ एमआई)।
- इस बुद्धिमत्ता वाले लोग संगीत प्रेमी होते हैं, संगीत के रूपों में अन्तर कर सकते हैं और उसे आँक सकते हैं, संगीत की रचना कर सकते हैं, वाद्ययन्त्र बजा सकते हैं, गा सकते हैं।
- यह क्षमता संगीतकारों, संगीत के रचनाकारों और वादकों में देखी जाती है।

भाषाई बुद्धिमत्ता

- 'शब्दों के अर्थ, शब्दों के बीच के क्रम और शब्दों की ध्वनि, लय, विभक्ति और छन्द के बारे में संवेदनशीलता' (स्रोत : कॉम्पोनेंट्स ऑफ़ एमआई)।
- बोलने या लिखने में शब्दों को प्रभावी ढंग से नियोजित करना, पढ़ने और वर्गपहेलियों में रुचि होना।
- यह क्षमता पत्रकारों, लेखकों और कहानीकारों में देखी जाती है।

तार्किक-गणितीय बुद्धिमत्ता

- 'संक्रियाओं या प्रतीकों के बीच तार्किक सम्बन्धों का अवधारण करने की क्षमता (उदाहरण के लिए गणितज्ञ, वैज्ञानिक)' (स्रोत : कॉम्पोनेंट्स ऑफ़ एमआई)।
- छाँटने और क्रमबद्ध करने में सक्षम (विभिन्न श्रेणियों में) होना, गणितीय कथनों, प्रतिज्ञप्तियों, संक्रियाओं और जटिल प्रतिज्ञप्तियों को समझना, सम्बन्धित अमूर्तन करने में सक्षम होना।
- यह क्षमता सांख्यिकीविदों, गणितज्ञों, कम्प्यूटर प्रोग्रामर तथा वैज्ञानिकों में देखी जाती है।

अन्तर्वैयक्तिक बुद्धिमत्ता

- दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत करने की क्षमता। दूसरों के मूड, भावनाओं, स्वभाव और प्रेरणा के प्रति संवेदनशीलता (जैसे मध्यस्थता करने वाले लोग)। (कभी-कभी इसे सामाजिक बुद्धिमत्ता भी कहा जाता है।) (स्रोत : कॉम्पोनेंट्स ऑफ़ एमआई)।
- समानुभूति और सामाजिक कौशल होना, कई व्यक्तिगत संकेतों के बीच अन्तर कर सकना, उनके लिए प्रभावी ढंग से अनुक्रिया कर पाना, लोगों को सकारात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करना और नकारात्मक भावनाओं पर विजय पाना।

- यह क्षमता सामाजिक कार्यकर्ताओं, परामर्शदाताओं, राजनेताओं, आस्था चिकित्सकों, प्रभावी माता-पिता और शिक्षकों में देखी जाती है।

अन्तःवैयक्तिक बुद्धिमत्ता

- 'अपनी स्वयं की भावनाओं, लक्ष्यों और चिन्ताओं के प्रति संवेदनशीलता और अपने स्वयं के लक्षणों के अनुसार योजना बनाने और कार्य करने की क्षमता। अन्तःवैयक्तिक बुद्धिमत्ता किसी ख़ास पेशे के लिए विशेष नहीं है; बल्कि यह तो जटिल आधुनिक समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक लक्ष्य है, जहाँ उसे अपने लिए परिणामी निर्णय लेने होते हैं।' (कभी-कभी इसे आत्मबुद्धि भी कहा जाता है।) (स्रोत : कॉम्पोनेंट्स ऑफ़ एमआई)।
- स्वयं को समझने और अनुकूल रूप से कार्य करने की क्षमता का एक ईमानदार, सटीक वर्णन (ताक़त और कमज़ोरियों के साथ); अपनी आन्तरिक मनोदशाओं और इच्छाओं और स्वस्थ आत्मसम्मान के बारे में जागरूकता।
- यह क्षमता दार्शनिकों, प्रभावी माता-पिता और शिक्षकों में देखी जाती है।

प्रकृतिवादी बुद्धिमत्ता

- प्रकृति की दुनिया में परिणामी भेद करने की क्षमता, उदाहरण के लिए, एक पौधे और दूसरे के बीच या एक बादल और दूसरे बादल के निर्माण के बीच (उदाहरण के लिए टेक्सोनोमिस्ट)। (कभी-कभी इसे प्रकृति बुद्धिमता भी कहा जाता है।) (स्रोत : कॉम्पोनेंट्स ऑफ़ एमआई)।
- पौधों और पशुओं में गहरी रुचि होना, प्रकृति के बारे में पता लगाना, पर्यावरण का प्रभावी ढंग से उपयोग करना।
- यह क्षमता किसानों, वनस्पति वैज्ञानिकों, पशु चिकित्सकों और आयुर्वेदिक चिकित्सकों में देखी जाती है।

डिस्लेक्सिया और एमआई

ऐसा देखा गया है कि एसएलडी वाले बच्चों में, आमतौर पर, एक या दो बुद्धिमत्ताओं की अनूठी क्षमता होती है। जब उस क्षमता का उपयोग किया जाता है तो बच्चे अकादमिक और सामाजिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी बच्चे में दैहिक-गतिसंवेदी बुद्धिमत्ता प्रबल है तो वह अपने शरीर और उसके अंगों का उपयोग करके प्रभावी ढंग से सीखेगा। ऐसे बच्चे अपना पाठ सीखने के लिए अपने हाथों से चीज़ें बना सकते हैं और उन्हें आकार दे सकते हैं। एसएलडी वाले बच्चों को अपनी प्रधान बुद्धिमत्ता का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि उन क्षेत्रों में वे असाधारण रूप से अच्छा कार्य करेंगे।

डिस्लेक्सिया और प्रौद्योगिकी

एमडीए ने डिस्लेक्सिया वाले बच्चों की सहायता के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में निवेश किया है। उन्होंने अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए इन्वेंशन लैब, जो आईआईटी मद्रास एलुमनी का एक उपक्रम है, के साथ मिलकर *एमडीए आवाज़ रीडर ऐप* विकसित किया है। अधिगम की अक्षमताओं वाले पाठक के लिए यह एक सहायक रीडिंग ऐप है। ऐप अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करता है और काफ़ी हद तक ऑफ़लाइन काम करता है। यह ऐप्पल डिवाइस और सरलतम एंड्रॉइड डिवाइस के लिए, टैबलेट या मोबाइल फोन में उपयोग के लिए उपलब्ध है, अतः काफ़ी सस्ता भी है। यह ऐप चित्र के रूप में कैप्चर किए गए मूलपाठ को पठनीय प्रारूप में बदलने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है और इसका उपयोग किसी भी मुद्रित सामग्री को पढ़ने के लिए किया जा सकता है, जैसे कि समाचार पत्र, पाठ्यपुस्तकें और कहानी की पुस्तकें।

एमडीए आवाज़ रीडर ऐप पाठक केन्द्रित है और पाठक की ज़रूरतों के अनुरूप 'अनुकूलन' सेटिंग्स प्रदान करता है। यह एसएलडी वाले बच्चों में स्वतंत्र पठन कौशल विकसित करने के लिए बहुसंवेदी रणनीति भी प्रदान करता है। इसका उद्देश्य डिस्लेक्सिया वाले बच्चे को निरन्तर सहायता प्रदान करना है, यहाँ तक कि सहायक शिक्षक की अनुपस्थिति में यह उसकी भूमिका भी निभाता है।

ऐप में पाठक को प्रदान की जाने वाली मुख्य सहायता कुछ इस प्रकार हैं :

- पढ़े जाने वाले पाठ के विभिन्न दृश्यों (विज़ुअल) की उपस्थिति का विकल्प।
- पाठक का ध्यान आवश्यक पंक्ति पर रखने के लिए पाठ की एक विशिष्ट पंक्ति पर विंडो-फोकस और मूलपाठ का पंक्ति दर पंक्ति डिस्प्ले।
- मूलपाठ को ट्रैक करने के लिए पेंसिल टूल।
- एक परिचित लहजे में और ज़रूरत के अनुरूप गति के साथ मूलपाठ का सस्वर वाचन।
- किसी कठिन शब्द को पढ़ने के लिए आवश्यकतानुसार उपयुक्त चित्र संकेत, ऑडियो उच्चारण, शब्द परिवार और अक्षर विभाजन।
- समझ बढ़ाने के लिए वाक्य सहायता देना।

एमडीए और प्रशिक्षण

एसएलडी वाले बच्चों की मदद करने की अपनी यात्रा में, एमडीए ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक को सशक्त बनाना जारी रखा है। तमिलनाडु राज्य सरकार के सहयोग से, एमडीए सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को एसएलडी के प्रति संवेदनशील बनाकर, पहचान किट प्रदान कर रहा है जिसे शिक्षक अपनी कक्षाओं में लागू कर सकते हैं और फिर उपचारात्मक तकनीकों तथा शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग कर सकते हैं। ई-शिक्षणम प्राथमिक विद्यालय के लिए एक उपचारात्मक सामग्री है जो ऑनलाइन मुफ्त उपलब्ध है।

एमडीए स्कूलों में संसाधन कक्षों (रिसोर्स रूम) की स्थापना भी करता है, जहाँ एमडीए के विशेषज्ञ एक वर्ष की न्यूनतम अवधि के लिए स्कूल में विशेष शिक्षा प्रदान करते हैं। यह प्रयास उस बच्चे के लिए फ़ायदेमन्द है, जिसका उपचार स्कूल परिसर के भीतर ही किया जाना है।

जीवन भर के लिए डिस्लेक्सिया का प्रबन्धन

डिस्लेक्सिया कोई बीमारी नहीं है, यह तो तंत्रिका सम्बन्धी एक स्थिति है, जो जीवन भर रहेगी। जब निम्न प्राथमिक कक्षाओं में ही बच्चों का उपचार कर दिया जाता है तो वे स्थितियों का सामना करना सीखते हैं। इससे उन्हें पहले तो अपने स्कूल और कॉलेज के जीवन और बाद में अपने करियर, रिश्तों और दैनिक जीवन की अन्य गतिविधियों का मार्ग निर्देशन करने में मदद मिलती है। ऐसा व्यक्ति जिस समाज में रहता है, वह उसका गौरवान्वित और उसमें योगदान करने वाला सदस्य बन जाता है।

[1] मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन (एमडीए) की स्थापना 1991 में माता-पिता और शिक्षकों के एक समूह द्वारा की गई थी, जो उस समय डिस्लेक्सिया वाले बच्चों की मदद करना चाहते थे जब यह शब्द बहुत सुपरिचित नहीं था।



मृदुला गोविन्दराजू अँग्रेज़ी साहित्य में एमए हैं और एक प्रशिक्षित कॉपी-एडिटर हैं। उन्होंने दस साल से अधिक समय तक प्रकाशन उद्योग में काम किया है और प्राथमिक स्कूल के बच्चों के लिए स्कूल की पाठ्यपुस्तकों का सम्पादन करने के साथ-साथ उन्हें डिज़ाइन भी किया है। उन्होंने ऑनलाइन प्रशिक्षण कोर्स सम्पादित किए हैं और प्रबन्धकीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए सामग्री बनाई है। मृदुला ऑनलाइन सेल्फ-लर्निंग ट्यूटोरियल के लिए स्टोरीबोर्ड और स्क्रिप्ट भी लिखती हैं। उन्होंने अधिगम की भिन्नताओं वाले बच्चों को पढ़ाया भी है। वर्तमान में वे एमडीए न्यूज़लैटर का सम्पादन करती हैं। उनसे govindaraju.mrudula@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल